B-4
L-8

ETHICS

सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र →

व्यापक रूप से मनुष्य के वे सारे कार्य और व्यवहार जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समाज को प्रभावित करते हैं, सार्वजनिक संबंधों के दायरे में आ जाते हैं इस रूप में मनुष्य का सामुदायिक जीवन उसके सार्वजनिक पक्ष को इंगित करता है।

सार्वजनिक संबंधों में वैसे मूल्यों, मानकों, नियमों एवं दिशा-निर्देशों को स्वीकार किया जाता है जिनके बारे में संबंधित पक्षों में आम सहमति होती है। सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता के निर्धारण के क्रम में वस्तुनिष्ठ आधारों की मदद ली जाती है।

सार्वजनिक संबंध के उदाहरण-

↳ डॉक्टर - मरीज का संबंध

↳ दुकानदार - ग्राहक का संबंध

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning
KHAN SIR

↳ प्रशासक - जनता का संबंध

सार्वजनिक संबंधों में नैतिक मूल्य-

↳ नियमों और दिशा- निर्देशों का पालन

↳ सत्यनिष्ठा, गैर- तरफदारी, भेदभाव रहितता, जवाबदेहिता, पारदर्शिता, संवेदनशीलता आदि।

सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता के पतन का कारण →

- भ्रष्ट आचरण की स्थिति में त्वरित एवं प्रभावी दण्ड विधान की कमी या उसके अनुपालन में शिथिलता (बड़ा अपराध छोटा दण्ड)।
- कम समय में अधिक कमाने की चाहिए।
- समाज में वैसे व्यक्तियों को अधिक प्रतिष्ठा और सम्मान जिनके पास नाना प्रकार की और अधिक संख्या में भौतिक वस्तुएँ उपलब्ध हैं भले ही वह भ्रष्ट आचरण से ही क्यों न इकट्ठा किया गया हो।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted KHAN SIR

- भ्रष्टाचार निरोधक एजेंसियों का पतन होना।
- गांधी के द्वारा बताए गए 7 सामाजिक पाप भी नैतिकता के पतन के कारक हैं-
  (i) सिद्धांत विहीन राजनीति
  (ii) बिना मेहनत के धन प्राप्त करना
  (iii) बिना अंतःकरण के सुख
  (iv) मानवता विहीन विज्ञान
  (v) त्यागरहित पूजा
  (vi) चरित्रविहीन ज्ञान
  (vii) नैतिकता विहीन व्यापार
  (viii) सार्वजनिक हित के स्थान पर व्यक्तिगत हित को प्रधानता।

सार्वजनिक जीवन में नैतिकता को बढ़ावा देने के उपाय →

- 7 सामाजिक पापों की विपरीत स्थिति को बढ़ावा -
  ↳ सिद्धांत सहित राजनीति

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform

↳ मेहनत से धन प्राप्त करना
↳ अंतःकरण युक्त सुख
↳ मानवता युक्त विज्ञान
↳ त्याग युक्त पूजा
↳ चरित्र युक्त ज्ञान
↳ नैतिकता युक्त व्यापार।

- नैतिकता के स्वर्णिम सूत्र का पालन।
- नियमों, कानूनों, दिशा-निर्देशों का त्वरित एवं प्रभावी क्रियान्वयन।
- बचपन में ही बच्चे के मन-मास्तिष्क में परिवार, समाज व शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से मूल्यों का बीजारोपण।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

निजी-सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता के विविध पक्ष →

- 1991 में नई आर्थिक नीति आने के बाद निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता

के नए आयाम उभरकर सामने आए हैं।

- सार्वजनिक क्षेत्र के अनेक उपक्रमों जैसे - सड़क, संचार, परिवहन, बिजली, स्वास्थ्य, बैंकिंग, रक्षा, शिक्षा आदि क्षेत्रों में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ी है।

निजी क्षेत्र	सार्वजनिक क्षेत्र
• मुख्य उद्देश्य - लाभ कमाना	• मुख्य उद्देश्य - सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करना, लोक कल्याण, देश का सर्वांगीण विकास।
• कमी - लाभ कमाने के क्रम में कई बार जनहित व पर्यावरणीय हित की उपेक्षा।	• कमी - निर्णय प्रक्रिया जटिल, अनावश्यक विलम्ब, प्रतिस्पर्धा की भावना नहीं, सेवा-सुरक्षा का अनुचित लाभ, दक्षता का पूर्ण उपयोग नहीं, विभिन्न सरकारी विभागों में आपसी सामंजस्य की कमी।
• सकारात्मक पक्ष - समय प्रबंधन, गुणवत्ता नियंत्रण, बेहतर सेवा, मितव्ययिता, आपस में बेहतर सामंजस्य, दक्षता, नवाचार, प्रतिस्पर्धा की भावना,	

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

संभावित चुनौतियों को भांपकर तैयारी।

निजी- सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता के मुद्दे →

- लोक - निजी भागीदारी के तहत वर्तमान में सड़कों, पूलों आदि का निर्माण किया जा रहा है, जिससे सार्वजनिक उद्देश्यों की पूर्ति होती है परंतु कई बार निजी कम्पनियाँ इसमें अत्यधिक लागत दिखाकर और तालमेल करके लम्बे समय तक टोल टैक्स वसूल करती हैं।
- लोक- निजी भागीदारी का एक नकारात्मक पक्ष लक्ष्य विस्थापन के रूप में दिखाई देता है, सरकार स्कूल, हॉस्पीटल आदि बनाने के लिए सस्ती दर पर जमीन निजी क्षेत्र को आवंटित करती है ताकि कमजोर वर्ग के लोगों को भी शिक्षा और इलाज

सुलभ हो सके परंतु प्रायः यह देखा जाता है कि ऐसे स्कूल और हॉस्पीटल सरकार से किए गए अपने वादे से मुकर जाते हैं और ऊँची फीस, डोनेशन आदि प्राप्त करते हैं।

- निजी क्षेत्र की कंपनियों में बड़े पैमाने पर निवेशकों का धन निवेशित होता है परंतु कई बार ऐसा देखा जाता है कि कंपनियाँ निवेशकों को आकर्षित करने के लिए गलत बैलेंस शीट प्रस्तुत करती हैं जिससे शेयर धारकों को नुकसान होता है, जैसे- सत्यम कंप्यूटर घोटाला।

- निजी हित के लिए सार्वजनिक हितों पर प्रहार का एक स्पष्ट उदाहरण मिलावट है विशेषकर खाद्य पदार्थों में मिलावट।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Platform
KHAN SIR

मूल्य विकसित करने में परिवार, समाज और शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका →

नैतिक दृष्टिकोण से मूल्य वे हैं जो मानव की सोच, व्यवहार एवं कार्य का मार्गदर्शन कर मानव जीवन को परिष्कृत, सार्थक एवं गरिमापूर्ण बनाते हैं।

मूल्य वे कसौटियाँ या व्यवहार के मानदण्ड हैं जिनके आधार पर उचित - अनुचित, अच्छा - बुरा, सही - गलत आदि का निर्धारण किया जाता है।

मूल्यों के प्रकार →

- सकारात्मक (वांछनीय मूल्य) - समानता, दया, करुणा, प्रेम, स्वतंत्रता, परोपकार, समानुभूति, न्याय, सत्य।
- नकारात्मक (अवांछनीय मूल्य) - जाति - भेद,

लिंग भेद, दहेज प्रथा, कुरीतियाँ एवं अंध-विश्वास, साम्प्रदायिकता, असंवेदनशीलता आदि।

- सापेक्ष मूल्य और निरपेक्ष मूल्य- ऐसे मूल्य जो समय और परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं वे सापेक्ष मूल्य कहलाते हैं, जैसे - गोपनीयता, पारदर्शिता आदि।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR